सिद्धार्थ का प्यारा हंस

एक नई कहानी

मेरा पन्ना

—शिविका ठकराल, छठी, भोपाल, म. प्र.

एक शुद्धोधन नाम का राजा रहता था। सिद्धार्थ और देवदत्त उनके पुत्र थे। सिद्धार्थ देवदत्त के बड़े भाई थे। वह लड़ाई करने में माहिर थे। वह चतुर भी थे। वैसे ही वैसे बड़े होकर वे महात्मा बुद्ध बने। देवदत्त भी कई चीज़ों में माहिर थे जैसे जंगल में रास्ता ना मिलने पर रास्ता ढूँढना। और हार ना मानना। अब राजा बूढ़ा हो चला था। उसने सिद्धार्थ और देवदत्त से कहा कि तुम दोनों मेरे मरने के बाद अच्छे से राज चलाना। और हमारे सैनिकों को प्यार देना। "सिद्धार्थ और देवदत्त यह सब तुम लोगों के ऊपर है।" राजा बोले। और एक साल बाद राजा का अन्त हो गया। वैसे ही वैसे सिद्धार्थ ये सब बातों को भूल चुका था और देवदत्त को ये सब बातें याद थीं। पर वह कहीं गया था। पर सिद्धार्थ को यह याद था कि उसे अच्छे से राज चलाना है। पर कैसे? उसे तो पसन्द ही नहीं था कि वह राज करे। पर क्या करें पिताजी की बात माननी ही है। सिद्धार्थ ने देवदत्त को राजा बना दिया। एक दिन की बात है सिद्धार्थ को कुछ काम से शहर जाना पड़ा। सिद्धार्थ देवदत्त के पास गया। उसने उसे यह खबर सुनाई और जब वह शहर की तरफ निकल रहे थे तब ही देवदत्त आया और बोला, "आप रथ में क्यों नहीं जाते, आपको आराम मिलेगा।" सिद्धार्थ बोले, "मेरे प्यारे भाई देवदत्त, तुम अपने बड़े भाई की बात नहीं मानोगे।" "मानूँगा भैया, पर रुकिए मैं अभी आया।" देवदत्त दौड़कर गया और किचन से खाना लाया और सिद्धार्थ को दे दिया। और बोला, "भैया आराम से जाना।" सिद्धार्थ चलते गए, चलते गए। रास्ते में उन्होंने देखा सड़क के बीच में बहुत लोगों की भीड़ लगी थी। सिद्धार्थ वहाँ गए और देखा कि एक आदमी हंस को उड़ाने के लिए डण्डी से मार रहा था। सिद्धार्थ ने आदमी से पूछा कि तुम इस हंस को क्यों मार रहे हो? उसने बोला कि मैं इसलिए मार रहा हूँ क्योंकि मैंने इन लोगों से बोला है कि मैं इसे पक्का उड़ाकर बताऊँगा। सिद्धार्थ बोले, "तुम इस हंस को छोड़ दो। ऐसे किसी पक्षी को परेशान नहीं करना चाहिए।" आदमी ने मना कर दिया, "मैं इसे नहीं छोड़ूँगा।" सिद्धार्थ ने चुपके से आदमी के पीछे से रस्सी में से हंस को निकालकर एक मुर्गी को डाल दिया। वह शहर से वापस लौटकर उसे अपने घर ले गया और उसकी चोट को ठीक करने की कोशिश की। दो-तीन दिन बाद उसकी चोट ठीक हो गई। वो सिद्धार्थ से खुश हो गया। उसने खुशी में सिद्धार्थ को अपने पंख फैलाकर दिखाए। सिद्धार्थ को अच्छा लगा। इसलिए वो उससे प्यार करने लगा।

—पूर्वा रावत, छठी, भोपाल, म. प्र.

—शारदा, तीसरी, होशंगाबाद, म. प्र.

मेरा पन्ना

पतझर के प्यारे दिन

पतझर के प्यारे दिन
आ पहुँचे हैं फिर।

पत्ते खड़खड़ाते हुए
गिरते हैं
धीमे-धीमे
ज़मीन पर।

हवा पेड़ों में से
खड़खड़ाती हुई
बहती है।

मैं खिड़की से
बाहर देखती हूँ
हैलोवीन-नारंगी पत्तों में
बच्चों को खेलते हुए।
उनकी हँसी का
ऊँचा स्वर
गली में गूँजता है।

मुझे खुशबू आती है-
कद्दू का हलुवा
पक रहा है
दहकती हुई हण्डिया में।

मैं चलती हूँ
काली, अँधेरी गली में, तो
दिखते हैं मुझे
खिलखिलाते, उदास
और आँसू बहाते हुए
कद्दू मेरी ओर हैरान
ताकते हुए।

पेड़ भी यूँ देखते हैं मुझे
जैसे मनुष्य हों।
कितना प्रेम करती हूँ मैं
पतझर के इन
प्यारे से दिनों से।

– केटी मैके, 12 साल, अमरीका (अँग्रेज़ी से अनुवादः तेजी ग्रोवर)

चन्दा मामा ठहरो थोड़ा

चन्दा मामा ठहरो थोड़ा
कहाँ चले तुम जाते हो?
खेल रहे क्या आँख मिचौली
बादल में छिप जाते हो?

मुझे बुला लो मैं देखूँगा
कितने हो छुपने में तेज़
नहीं पकड़ पाओगे मुझको
मैं दौड़ूँगा तुमसे तेज़

– प्रस्तुतिः नेहा, दूसरी, दिल्ली

बच्चा रो रहा है...

मम्मा बच्चे को नहलारी है। साबुन आँख पे है। मम्मा ने पानी भर के रखा हुआ है और पानी बाल्टी में से गिर रहा है। मम्मा ने खिड़की पर साबुन, तेल, ब्रश व पेस्ट रखा है। मम्मा ने टॉवल को लटका के रखा हुआ है। पानी ठण्डा है तो बच्चा रो रहा है।

– रिया मल्होत्रा, पहली, पुणे, महाराष्ट्र

– खुशी, दूसरी, जयपुर, राजस्थान

पाठशाला

तीन सहेलियाँ थीं शीतल, पूनम और मोनिका। वे दिन भर खेलती थीं लेकिन पढ़ने नहीं जाती थीं। एक दिन खेलते-खेलते वे पाठशाला में घुस गईं। वहाँ उनके जैसे बहुत-से बच्चे पढ़ रहे थे। कुछ समय बाद वे एक मैदान में खेलने लगे। अब यह देखकर उन तीनों का मन भी स्कूल जाने को हुआ। अगले दिन से उन्होंने घूमना छोड़ दिया और पाठशाला आना शुरू कर दिया। फिर उन्हें वहाँ और कई सारे दोस्त मिल गए।

– यशोदा, चौथी, भरवलिया, बिहार